जज्बातों से खेलते हैं राहुल

परत-दर-परत

प्रभात कुमार रॉय

अपनी अधिग्रहित भूमि के लिए बाजार भाव से बेहद कम प्रदान किए जा रहे सरकारी मुआवजे से क्रोधित हुए किसान, राजसत्ता से हर स्थान पर टकरा रहे हैं। जो कुछ समूचे देश में हो रहा है, वही सब कुछ ग्रेटर नोएडा के ग्राम भट्टा पारसौल में भी घटित हुआ कि किसानों और पुलिस-प्रशासन के मध्य टकराव हुआ। बस भट्टा पारसौल में यह टकराव भयानक हिंसा में तब्दील हो गया। इस टकराव के बाद उत्पन्न हुए हालात पर राहुल गांधी के बयानों ने अजब बवाल पैदा कर दिया। राहुल गांधी ने भट्टा पारसौल में 72 किसानों को जिंदा जलाए जाने के जघन्य अपराध का इल्जाम पुलिस-प्रशासन पर आयद कर दिया और गांव की महिलाओं के साथ बलात्कार किए जाने का संगीन इल्जाम भी लगा दिए। राहुल गांधी ने भट्टा पारसौल में एक बड़े राख के ढेर में जिंदा जलाए किसानों के अवशेष होने की आशंका जताई। स्थानीय पुलिस-प्रशासन द्वारा राख के सैमपिलों को बाकायदा फोरेंसिक जांच के लिए भेज दिया गया। पुलिस-प्रशासन ने दावा किया कि केवल दो किसान ही पुलिस फायरिंग में मारे गए और बाकी किसान खौफजदा होकर घरों से फरार हैं, जिनकी गुमशुदगी और जिंदा जलाए जाने का इल्जाम राहुल गांधी ने आयद किया है। राहुल गांधी पुलिस-प्रशासन के बरखिलाफ अपने इल्जामात को सिद्ध करने के लिए अभी तक कोई सबूत पेश नहीं कर सके।

राहुल गांधी कांग्रेस के अति महत्वपूर्ण लीडर हैं, जिन्हें कांग्रेस राष्ट्र के भावी प्रधानमंत्री के तौर पर पेश करती है। राहुल गांधी ने स्वयं भट्टा पारसौल कांड तहत उत्तर प्रदेश शासन द्वारा 72 किसानों की जघन्य हलाकात की बात देश के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के समक्ष पेश की, किंतु कितने विस्मय की बात है कि प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने अपनी पार्टी के इतने महत्वपूर्ण लीडर के इल्जामात को कतई संजीदगी से क्यों नहीं लिया? प्रधानमंत्री अभी तक किसी भी केंद्रीय जांच एजेंसी के माध्यम से भट्टा पारसौल कांड की जांच पड़ताल का हुक्म तुरंत जारी कर सकते थे। इसी एक तथ्य से अंदाजा लगाया जा सकता है कि राहुल गांधी ने किस कदर बेबुनियाद इल्जाम आयद किया, जिसका संज्ञान तक देश के प्रधानमंत्री ने कदाचित नहीं लिया।

इसके सारे राजनीतिक ड्रामे के पश्चात कांग्रेस बैकफुट पर आ गई और कहने लगी कि मिडिया ने राहुल गांधी के बयान को ठीक तरह पेश नहीं किया। राहुल गांधी ने ऐसा कुछ कहा ही नहीं जैसा कि मिडिया में पेश किया गया। पर राहुल गांधी में संजीदगी और सच्चाई की नितांत कमी रही है कि किसानों के ऊपर जारी जुल्मों सितम के ज्वलंत सवाल को अपने सफेद राजनीतिक झूठ से कलंकित कर दिया।

कांग्रेस पार्टी का संपूर्ण राजनीतिक चरित्र 1990 के पश्चात नई अर्थनीति के सृजन के साथ परिवर्तित हो गया। कांग्रेस पार्टी ने समाजवाद का दामन छोड़कर खुलेआम कार्पोरेट कैपिटलिज्म से नाता जोड़ लिया, तभी से देश के किसानों पर निरंतर कहर टूट रहा है। दो लाख से अधिक किसान राष्ट्रभर में आत्महत्या कर चुके हैं। किसानों की बदहाली के लिए सबसे अधिक यदि कोई पार्टी जिम्मेदार रही है तो वह कांग्रेस पार्टी है। अन्य सभी दल तो कांग्रेस पार्टी की किसान विरोधी आर्थिक नीतियों का अनुसरण कर रहे हैं। दुर्भाग्यवश आज देश में गरीब किसानों की सच्ची हमदर्द कोई राजनीतिक पार्टी नहीं है, जो वास्तव में उसकी मसीहा बन सके। किसानों को जाति-पांति, बिरादरियों और इलाकों में तकसीम करके राजनीतिक दलों ने उन्हें वोट बैंक बना दिया है।

उत्तर प्रदेश में की राजसत्ता से कांग्रेस पार्टी 1989 से बाहर रही है। कांग्रेस ने एक बार प्रांत की राजसत्ता क्या गंवाई कि वह उसे अभी तक पुनः हासिल न कर सकी। 2012 में उत्तर प्रदेश में विधान सभा का चुनाव होना है और इसे जीतने की जोड़ तोड़ का सिलसिला शुरू हो चुका है। कांग्रेस पार्टी ने उत्तर प्रदेश का विधान सभा चुनाव जीतने के लिए कमर कसना प्रारंभ कर दिया है। उत्तर प्रदेश में कांग्रेस पार्टी अपने दो दशक से उखड़े हुए पांवों को फिर से जमाने के लिए अपने युवराज राहुल गांधी के कौशल और रणनीति पर निर्भर है। विगत चुनाव में भी राहुल गांधी ने उत्तर प्रदेश में कांग्रेस पार्टी के लिए उम्मीद जगाई थी, किंतु उनकी कयादत नाकाम साबित हुई और कांग्रेस विधान सभा चुनाव में मात्र 26 सीटों पर कब्जा कर सकी। राहुल गांधी के पास ऐसा करिश्माई व्यक्तित्व नहीं है कि उत्तर प्रदेश में कांग्रेस पार्टी की तकदीर बदल डाले। राहुल गांधी कभी किसी दलित की झोपड़ी में रात गुजारते हैं, तो कभी बुंदेलखंड के किसानों के हालात बदलने के लिए केंद्र सरकार का बड़ा पैकेज प्रदान करा देते हैं। किंतु अभी तक राहुल गांधी ना तो बुंदेलखंड किसानों को न किसी भी इलाके के दलितों को कांग्रेस पार्टी से जोड़ सकने में कामयाब हुए। आखिर क्यों राहुल गांधी गरीब दलितों और किसानों का यकीन जीतने में नाकाम रहे हैं। इसलिए कि उनके दलित और किसान सरोकार में संजीदगी, समर्पण और सदाकत की बेहद कमी रही। अन्यथा सबसे पहले राहुल गांधी अपनी कांग्रेस पार्टी की किसान विरोधी आर्थिक नीतियों को बदलवाने की कोशिश करते। दो लाख करोड़ का अनाज घोटाला कांग्रेस की कयादत वाली हुकूमत में ही होता है और राहुल गांधी एकदम खामोश रहते हैं। केंद्र सरकार किसानों से तो कम दामों में अनाज खरीदती है और विदेशों से दो गुने दामों पर अनाज आयात किया जाता है। राहुल गांधी यदि वास्तव में उत्तर प्रदेश के किसानों के साथ हमदर्दी रखते हैं तो जल्द से जल्द केंद्र में नया भूमि अधिग्रहण एक्ट पास कराने की कोशिश में जुटें ताकि किसानों को अधिग्रहित भूमि का बाजार भाव से मुआवजा मिल सके। औद्योगीकरण के लिए किसानों से उनकी उपजाऊ भूमि अधिग्रहित करने के बजाय देश में बेकार पड़ी करोड़ों एकड़ बंजर भूमि प्रदान करने का प्रावधान किया जाए। किसानों की उपज का समुचित दाम मिलने की सरकारी गारंटी हो।

मोबाइल:09319310533

कांग्रेस पार्टी का संपूर्ण राजनीतिक चरित्र 1990 के पश्चात नई अर्थनीति के सृजन के साथ ही परिवर्तित हो गया

Reproduced by www.hobbyclubby.com with authors permission